P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

राष्ट्रीय चेतना और आधुनिकता

अमित शुक्ला
प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शा. ठाकुर रणमत सिंह
महाविद्यालय,
रीवा, मध्य प्रदेश

सारांश

राष्ट्रीय चेतना शब्द आधुनिक है जो प्रगतिशील कविता का मुख्य आधार है, प्रगतिशील कविता के इस राष्ट्रीय चेतना शब्द में जाति सम्प्रदाय धर्म सीमित भू–भाग की संकीर्णता के स्थान पर एक समग्र देश और उसके भीतर निवास करने वाली समस्त जातियों सम्प्रदायों भिन्न–भिन्न भूखंडों और रीति रिवाजों के लोगो का संश्लिष्ट सामूहिक रूप तथा उनका जीवनानुभव उभरता है। जनांदोलन के इस काल में राष्ट्रीय एकता का जो स्वरूप उभरा वही हमारे वर्तमान राष्ट्रीय चेतना की आधार भूमि है। प्रगतिशील हिंदी कविता का राष्ट्रबोध आधुनिक काल में विशेष रूप से भारतेंदु युग की कविताओं में प्राप्त होता है। तब से लेकर आज तक उसके स्वरूप का विकास होता रहा है। आरंभ मे छोटे – मोटे दुख दर्दो सहज भावनात्मक प्रतिक्रियाओं तथा अतीत स्मरण के रूप में लाक्षित होने वाली राष्ट्रीय चेतना धीरे – धीरे जटिल और संश्लिष्ट होती गयी।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय चेतना, प्रगतिशील, हिंदी कविता, संस्कृति, भाषा, पश्चिमी सभ्यता, आधुनिक– काल।

प्रस्तावना

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व तक अपनी सांस्कृतिक एकता के बावजूद भारत व्यावहारिक रूप से भिन्न – भिन्न राज्यों में बॅटा हुआ था। वास्तव में पूरे भारत वर्ष की एकता के अर्थ में, राष्ट्रीय चेतना की भावना का विकास आधुनिक काल में हुआ यह राष्ट्रीय चेतना प्रगतिशील कविताओं मे देखने को मिली। राष्ट्रीय चेतना का आभास तब होता है, जब अॅग्रेजो ने समूचे देश में एक शासन स्थापित किया, जिससे देश के सभी लोग एक शासक की प्रजा हुए. और उस समय पूरे देश को समान यातना का अनुभव हुआ। अपने – अपने में बंटे हुए लोगो को यह प्रतीत हुआ कि वे सब मिलकर एक है। वे चाहे किसी जाति या धर्म के हो, अॅग्रेजों के गुलाम है, इसलिए अॅग्रेजी शासन के विरूद्ध मुक्ति का आंदोलन किसी एक धर्म या प्रदेश में सीमित न रह कर पूरे देश में व्याप्त हुआ, इस प्रकार जनांदोलन के इस काल में राष्ट्रीय एकता का जो स्वरूप उभरा वही हमारे वर्तमान राष्ट्रबोध या राष्ट्रीय चेतना की आधार भूमि है। भारत एक विशाल देश है, जहॉ अनेक संस्कृतियों भाषाओं तथा रीति रिवाजों के लोग रहते है। ऊपर–ऊपर से वे एक दूसरे से अलग–अलग दिखलाई पड़ते है पर उनका मूल श्रोत एक ही है जो आंतरिक रूप से सब को बांधता है, वह है प्राचीन संस्कृति तथा प्राचीन आध्यात्मिक सत्य, यही सत्य भारत की राष्ट्रीयता है। कहा जाना चाहिए कि भारत में उभरने वाली राष्ट्रीयता और राष्ट्रबोध की भावना में तीन मुख्य बातें लक्षित होती है।

1. भारतीय पराधीनता की यातना का अहसास और उससे मुक्ति पाने का प्रयास।
2. पश्चिमी सभ्यता और अलगाव की भावना से आक्रांत होती हुई भारतीय चेतना के उद्धार के लिए तथा उसमें एकता और स्वामिभान का बल फूंकने के लिए अपनी प्राचीन संस्कृति से समुज्ज्वल रूप का प्रस्तुतीकरण।
3. उपयोगी आधुनिक मूल्यो के आलोक में राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था का पूर्नविचार तथा पुर्नगठन। [1]

स्वतंत्रता प्राप्ति तक प्रथम दो तत्व बहुत प्रबल रहे पर स्वाधीनता प्राप्ति के बाद तीसरे तत्व की प्रधानता और सार्थकता शेष रह गई। इसका परिणाम यह हुआ कि देश की राजनीतिक व्यवस्था की प्रतिष्ठा पर और विकास का प्रयास तेज हुआ तथा नवीन राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण उत्पन्न समस्याओं से जूझने और उनका समाधान खोजने की चेष्टा प्रारंभ हो गई स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वर्तमान समस्याओं और प्रश्नों के संदर्भ में जब हम अपने अतीत गौरव को देखते हैं तब उससे अभिभूत होने के स्थान पर उसका

पुनर्मूल्यांकन करते है। और विचार के स्तर पर हम उससे अपने को जोड़ते या काटते है, उसके भीतर निहित द्वन्दों विसंगतियो और मानवीय संवेदनाओं की तलाश करते है। हिंदी कविता का राष्ट्रबोध आधुनिक काल में विशेष रूप से भारतेंदु युग की कविताओं में प्राप्त होता है। तब से लेकर आज तक उसके स्वरूप का विकास होता रहा है। आरंभ मे छोटे – मोटे दुख दर्दो सहज भावनात्मक प्रतिक्रियाओं तथा अतीत स्मरण के रूप में लक्षित होने वाला राष्ट्रबोध धीरे – धीरे जटिल और संश्लिष्ट होता गया था अनेक मानवीय और सार्वभौम प्रश्नों तथा संवेदनाओ से सम्पन्न होता चला गया। नयी – नयी राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों ने उसे जटिल रूप प्रदान किया। द्विवेदी काल तक हिंदी कविता मे व्यक्त भारतीय राष्ट्रीयता बहुत कुछ हिंदू राष्ट्रवाद के रूप में दिखाई पड़ती है। इसका कारण हिंदू राष्ट्र बोध का प्रचार नहीं था बल्कि वह परंपरागत दृष्टि थी जो उदार भारतीय राष्ट्रवाद से मेल नहीं खाती थी।

अध्ययन का उद्देश्य

राष्ट्रीय चेतना प्रगतिशील कविता का मुख्य आधार है, प्रगतिशील कविता के इस राष्ट्रीय चेतना शब्द में जाति सम्प्रदाय धर्म सीमित भू–भाग की संकीर्णता के स्थान पर एक समग्र देश और उसके भीतर निवास करने वाली समस्त जातियो सम्प्रदायों भिन्न – भिन्न भूखंडों और रीति रिवाजो के लोगो का संश्लिष्ट सामूहिक रूप तथा उनका जीवनानुभव उभरता है। प्रगतिशील हिंदी कविता का राष्ट्रबोध आधुनिक काल में विशेष रूप से भारतेंदु युग की कविताओं में प्राप्त होता है। तब से लेकर आज तक उसके स्वरूप का विकास होता रहा है। आरंभ मे छोटे – मोटे दुख दर्दो सहज भावनात्मक प्रतिक्रियाओं तथा अतीत स्मरण के रूप में लाक्षित होने वाली राष्ट्रीय चेतना धीरे – धीरे जटिल और संश्लिष्ट होती गयी। 21 वीं सदी के बदलते परिदृश्य में राष्ट्रीय चेतना की दशा व दिशा का अध्ययन करना ही इस शोध का उद्देश्य रहा है।

द्विवेदी युग से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक हिंदी कविता में जो राष्ट्रीय चेतना के स्वर मिलते है, वे कहीं खंडित रूप में तो कहीं संश्लिष्ट रूप में दिखलाई पड़ते है। इन कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का सबसे स्थूल रूप वह है जिसमें विदेशी शासन के अत्याचारों उनसे प्रसूत जन यातनाओं और जनता के मन में उठती हुई क्रोध तथा असंतोष की ललकारों का चित्रण है। रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहन लाल द्विवेदी, माखन लाल चतुर्वेदी आदि की कृतियों में प्रमुख रूप से राष्ट्रीय चेतना का यही स्वर सुनाई पड़ता है। इनमें वस्तु स्थिति की सही व्याख्या के स्थान पर भावुक प्रतिक्रिया है। छायावाद काल के राष्ट्रबोध में आत्मपीड़न तथा अंहिसाजन्य नरम प्रतिरोध दिखाई पड़ता है। किंतु इसके बाद वामपंथी दलों के उदय समाजवादी सिद्धांतो के प्रचार तथा विदेशी शासन के झूठे वायदों और अधिकाधिक कठोर विजय एंव जटिल होती परिस्थितियों के कारण कविता का स्वर अधिक उग्र , यथार्थवादी और लोकोन्मुख होता गया। दूसरी बात यह हुई कि प्रगति वाद के प्रभाव से देश के भीतर बनते हुए शोषकों तथा शोषितों के अनेक वर्गों की पहचान होती गई। लडाई केवल अग्रेंजी सत्ता से ही नहीं है बल्कि सामंती, पूंजीवादी सभ्यता तथा उनके प्रतिनिधि देशी शोषकों से भी जो अपने – अपने ढंग से देश की जनता के लिए शोषण के अस्त्र – शस्त्र बन रहें हैं। सन् 1938 से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक की हिंदी कविता का राष्ट्रबोध–वैचारिक उग्रता और समाजोन्मुखता के निकट पहुंच गया था। इन कविताओं में समाज की पीड़ा और अभाव के साथ ही साथ जिन्दगी का संघर्ष, अडिग विश्वास और भविष्य की सुंदर आकांक्षा है। कविता को सोददेश्य मानने की दृष्टि से लिखे गए इस साहित्य के लेखकों में केदार नाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, नागार्जुन शिवमंगल सिंह सुमन, त्रिलोचन आदि के नाम उल्लेखनीय है। सन् 1943 से 1947 के बीच (स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक) हिंदी कविता में प्रयोगवादी कवियों का वर्चस्व रहा जिन्होंने नये सत्य के शोध और प्रेषण के माध्यम से राष्ट्र चेतना के लिए नए जीवन सत्य के खोज की घोषणा की, वह सत्य मध्यवर्गीय समाज के ब्यक्ति का था किंतु ये कवि और उनकी कविता मध्य वर्गीय जन–जीवन के सामूहिक जागरण और राष्ट्र के व्यापक जन–जीवन के बोध से असम्पृक्त रहने के कारण अपनी सीमाओं को तोड़ने में सक्रिय नहीं हों सके। भारत की स्वतंत्रता के समय यानी 1947 में हिंदी में नयी कविता लिखी जा रही थी जो परम्परागत कविता से आगे नये भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नए मूल्यों और नये शिल्प – विधान का अन्वेषण कर रही थी। जिस समय स्वतंत्रता प्राप्ति के परिप्रेक्ष्य में सुख के असीम सपने संजोए कुछ कवि स्वागत गीत गा रहे थे, स्वतंत्रता राष्ट्र की नयी परिकल्पना को रूप और दिशा दे रहे थे, उस समय नयी कविता के प्रतिनिधि कवि वृहत्तर जीवन की आस्था को बल देने वाली लघु मानवतावादी राष्ट्रीय जीवन मूल्यों की सकारात्मक कविता लिख रहे थे।

प्रगतिशील कविता मे राष्ट्रीय चेतना देश के स्थूल सुख – दुख, उत्साह – उमंग और आक्रोश के चित्रण में ही नहीं होता बल्कि राष्ट्र की आत्मा या चेतना की पहचान से होता है। यह चेतना स्थिर न होकर गतिशील रहती है – अर्थात नए – नए परिस्थितियों मे नए – नए कोण उभारती है। और पुराने कोण छोड़ती रहती हैं। हिंन्दी की नयी कविता का संबंध इसी चेतना से था, वह सतहही उत्साह में दिशाहीन लेखन में न पड़कर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय जीवन के वृहत्तर मुल्यों से जुडी हुई है – इसमें अज्ञेय , मुक्तिबोध , भारतभूषण अग्रवाल, भवानी मिश्र, नरेश मेंहता, धर्मवीर भारती आदि की कविताएँ सूक्ष्म राष्ट्रीय चेतना की सशक्त भावनाओं को अभिव्यक्ति देती हैं। दोनेा प्रकार के राष्ट्रीय चेतना को कुछ उदाहरणों द्वारा समझ सकते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हरिवंश राय बच्चन ने लिखा –[2]

"हो गया है, आज मेरे राष्ट्र का सौभाग्य स्वर्ण विहान
कर रहा हैं आज मै आजाद हिदुस्तान का आव्हान"

बच्चन को "आजाद" राष्ट्र की जिम्मेदारियों का भी बोध है–

"आज से आजाद रहने का तुझे है मिल गया अधिकार किन्तु उसके साथ जिम्मेदारियों का शीश पर है, भार।

किन्तु गिरजा कुमार माथुर की कविता मे राष्ट्रीय चेतना कुछ अधिक सूक्ष्म है–

" आज जीत की रात
पहरू, सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना।''

उनकी दृष्टि से देश का यथार्थवादी रूप ओझल नही हुआ, इसीलिए वे कहते है–

"शोषण से मृत है समाज,
कमजोर हमारा घर है,
किन्तु आ रही नई जिन्दगी
यह विश्वास अमर है। "

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में होने वाले परिवर्तनों की कल्पना और परिवेशगत तथा परिवेश मुक्त जीवनानुभव को हिन्दी कविता में अभिव्यक्त करने का प्रयास हुआ है। शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन–दोनों परिवेशों को लेकर लिखने वाले कवियों ने राष्ट्र के जीवन की चेतना को स्वर देने का प्रयास किया है। देश एक, लक्ष्य एक, कर्म एक है, का नारा हिन्दी कवियों की राष्ट्रीय चेतना को ध्वनित करता है।

देश के बिखरे जीवन स्वप्नों को राष्ट्रीय चेतना के सशक्त जीवनानुभवों में पिरोने का काम देशवासियों का है। अज्ञेय ने लिखा है–3

"सुनो हे, नागरिक
अभिनव सभ्य भारत के नए जनराज्य के
सुनों यह मंसूबा तुम्हारी है।
पला है आलोक चिर दिन यह तुम्हारे स्नेह से,
तुम्हारे ही रक्त से।
तुम्ही दाता हो, तुम्ही होता, तुम्ही यजमान हो
यह तुम्हारा पर्व है।

हिन्दी कविता में यह प्रयास बराबर हुआ है कि भाषा, धर्म, भूगोल, की विभिन्नता में राष्ट्रीय एकता के बोध को बनाए रखें भवानी प्रसाद मिश्र ने लिखा है–

"एक से बादल जमे है,
गगन भर फैले रमे हैं,
ढेर हूँ उनका, न फाँके,
जो कि किरणें मुझे–झाँके,
लग रहे हैं, वे मुझे यों
माँ कि आगॅन लोव दे ज्यौं।"

नागार्जुन ने जनता को ही राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक माना है। जनता ही राष्ट्र है, राष्ट्र ही जनता है। सब कुछ उसी का है, सब कुछ वही है–

"खेत हमारे भूमि हमारी,
सारा देश हमारा है,
इसीलिए हमको उसका,
चप्पा चप्पा प्यारा है।[4]

समय के साथ राष्ट्रीय जीवन से जुड़ी हुई कल्पनाऍं और सपने बिखरने लगे। भारतीय समाज का परिवेश बड़ा जटिल और विषम है। उसकी सामाजिक स्थिति तथा उसका यथार्थ देश का यथार्थ बनकर कुण्ठा, लाचारी और निराशा का रूप ग्रहण करता गया। राष्ट्रीय जीवन के हर क्षण को विश्वास के साथ भोगना उसकी पीड़ा और निराशा को भी जीवन सत्य मानकर उससे संघर्ष करना हमारी कविता का लक्ष्य होना चाहिए था पर ऐसा नही हुआ। अकविता अतिकविता, अस्वीकृत कविता, विद्रोही पीढ़ी कबीर पीढ़ी क्रुद्वपीढ़ी आदि के नाम से सन् साठ के बाद जो काविताएं हिंदी में आई वह देश की राष्ट्रीय चेतना की मूर्तिभंजक रचानांए थी। पीड़ा और निराशा को जीवन सत्य मानकर दिन रात मरसिया पढ़ना या कुढ़ना या उपदेश देना या कुंठाग्रस्त होना – सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के समस्त विकास के पीछे कार्य करने वाली मनुष्य की जिजीविषा प्रेम, आस्था और उल्लास को अस्वीकार करना है। हिंदी कविता ने वह अर्थवत्ता खो दी जो अभाव पक्ष के भीतर से जीवन का संकेत करती है मोहभंग से पीड़ा, तल्खी, व्यथा और कुंठा ही नहीं जन्म लेती टूटनें की वास्तविकता और बनने के सपने भी जन्म लेते है जो किसी राष्ट्र को जीवित रखते है, अव्यवस्था, विसंगति, मूल्यहीनता विरोधाभास और आदर्शो के अकाल से कवि आंदोलित तो होता है पर अतीत को निर्ममता से काटकर नया सृजन नहीं कर सकता। संकट के समय चाहे वह चीन और पाकिस्तान का आक्रमण हो चाहे मार काट हिंसा या आंतकवाद की चुनौती हो, चाहे बाढ़ या अकाल का तांडव हो देश का मानस राष्ट्र की चेतना एक अजीब तरह की राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रबोध की भावना से आंदोलित हो उठती है। हिंदी कविता में भी उसके स्वर सुनने को मिल जाते है।

सांसों में तूफान जगाओं
आखों में अंगार जलाओं
मस्तक सदा रहा है ऊॅचा, धरती पर ईमान का
भारत माता देख रही है, फहरे झंडा आन का।

वर्तमान हिंदी कविता में भी यथार्थवादी दृष्टि काल्पनिक या आदर्शवादी या भावुकता मिश्रित मानववाद से संतुष्ट न होकर जीवन का मूल्य, उसका सौदर्य और प्रकाश राष्ट्र के यथार्थ में खोजती है। वर्तमान की गहन निराशा और बिखराव के बीच भी हिंदी कविता अनागत ज्योति के लिए प्रतीक्षमान है, इसीलिए राष्ट्रीय जन – जीवन को एकांत का दामन छुडाकर सामान्य जीवन के बीच आने की प्रेरणा देती है।

उठो इस एकांत से
दामन छुड़ाओ
चलो उतरकर नीचे की सड़क पर
यहां जीवन सिमट कर बह रहा है
साहस की दिशा में (भवानी मिश्र)[5]

निष्कर्ष

यह है कि वर्तमान युग में हमारी राष्ट्रीय समस्याएं निरतंर जटिल और गहरी होती जा रही है। भूगोलिक और सांस्कृतिक इकाइयॅा टूटन के कगार पर है अब अतीत की गरिमा से अभिभूत होने के स्थान पर कविता में यथार्थ के परीक्षण का समय है। राष्ट्रीय चेतना की कविता धारा में राष्ट्रीय अंर्तराष्ट्रीय समकालीन संदर्भो से जोड़कर विशिष्ट सांस्कृतिक बोध को जागृत करने की रचनांए लिखी जानी चाहिए। राष्ट्रीय घटनाओं पर आधारित फुटकर रचनाए वर्तमान राष्ट्रीय जीवन की जटिल गहराइयों में नहीं उतर सकती। जो कविताएं अनुभूति की आंच से ऊष्म नहीं होगी जिनमें गहरे

जीवनानुभवों और सौंदर्य दृष्टि के स्थान पर उत्तेजना होगी या नकली बौद्धिकता होगी या मात्र राजनीतिक प्रतिबद्धता होगी वह कविता राष्ट्रीय चेतना को सही अर्थों और संदर्भो में व्यक्त नहीं कर सकती।6

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *वीणा, रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग इन्दौर जनवरी 2008 पृष्ठ 24,*
2. *आजकल मासिक साहित्यिक पत्रिका, संसद मार्ग नई दिल्ली मार्च 2008 पृष्ठ 68*
3. *नवभारत टाइम्स समाचार पत्र नई दिल्ली 8 सितंबर 2006, पृष्ठ, 4*
4. *आहा! जिंदगी – जून 2013 ,पृष्ठ–45*
5. *दैनिक भास्कर समाचार पत्र, रीवा म.प्र. – 15 दिसंबर 2013, पृष्ठ,04*
6. *स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष*